नए नियम की कलीसिया का आरम्भ किसी भी जगह पर कैसे किया जा सकता है

मसीह की कलीसिया की मंडलियों की स्थापना करने के लिये एक साधारण गाईड

प्रकाशकः

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली - 110049

नोटः

बाइबल के पत्राचार पाठ तथा मसीही साहित्य के लिये प्रकाशक को लिखिये।

"हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों-ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?"
(१ कुरिन्थियों १:१०-१३)

भूमिका

जब लोग कलीसिया अर्थात् चर्च के बारे में कुछ सुनते हैं तो उनका ध्यान एक इमारत या भवन की ओर जाता है। अकसर लोग कलीसिया को "गिरजा" कहकर सम्बोधित करते हैं। लेकिन आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि सम्पूर्ण बाइबल में गिरजा या इसी प्रकार के किसी अन्य शब्द का कहीं उल्लेख तक नहीं है ! बाइबल के अनुसार कलीसिया का अर्थ है "एक मंडली", ऐसे लोगों की एक मंडली जिन्हें विशेष रुप से चुना या बुलाया गया है। बाइबल के अनुसार, केवल एक ही कलीसिया है, जिसे मसीह यीशु ने बनाया था, और वह केवल उसी की है। मसीह के अनुयायियों की इस कलीसिया (मंडली) को बाइबल में मसीह की आत्मिक देह और परमेश्वर का घराना, और परमेश्वर का मंदिर कहकर संबोधित किया गया है।

मनुष्य का उद्धार करने को परमेश्वर मसीह में होकर स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था। मसीह ने क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान करके सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित किया था। कोई भी व्यक्ति मसीह के बारे में सुनकर जब उस में विश्वास लाता है, और उसकी उन आज्ञाओं को मानता है जिन्हें मानकर मनुष्य को पाप से छुटकारा मिलता है, तो मसीह उस व्यक्ति को अपनी कलीसिया, अर्थात् उद्धार पाए हुए लोगों के समूह में, मिला लेता है। और प्रत्येक स्थान पर जहां लोग इस प्रकार से मसीह के अनुयायी बनते हैं, वहीं मसीह की कलीसिया अर्थात् मसीह की मंडली की स्थापना हो जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला गया है। मेरी आशा है, कि जब लोग विभिन्न स्थानों पर इस पुस्तक को पढ़ेंगे, तो अनेक जगहों पर मसीह की कलीसियाएं स्थापित होंगी।

सनी डेविड

मसीह की कलीसिया,
पोस्ट बॉक्स 3815,
नई दिल्ली - 110049

परिचय

मसीह की कलीसिया, वह एक मात्र कलीसिया है जिस के बारे में आप बाइबल के नए नियम में पढ़ सकते हैं।

यदि आपके आस-पास मसीह की कलीसिया अभी नहीं है, तो आप उसे आरम्भ कर सकते हैं। यह भी संभव है कि उस मण्डली का आरम्भ आप ही के घर से हो जाए।

आज इस से बड़ी और कोई बात नहीं हो सकती कि संसार के सब लोग मनुष्यों के बनाए हुए उन धर्मों और मनुष्यों की बनाई हुई उन कलीसियाओं को, जो मसीहीयत के नाम में शताब्दियों से विद्यमान हैं, छोड़कर सच्ची मसीहीयत तथा मसीह की कलीसिया की ओर वापस लौट आएं।

ऐसा वास्तव में किया जा सकता है, यदि आज लोग उन मौलिक शिक्षाओं तथा नियमों को मान लें जिन्हें मसीह ने आरम्भ में अपनी कलीसिया के लिये दिया था और जिन्हें उसके प्रेरितों ने आरम्भ में सिखाया था।

यह एक वास्तविकता है, कि यदि लोग आज उसी प्रकार बनना चाहते हैं जैसे कि नए नियम के समय में लोग थे, तो उन्हें वैसे ही कार्य भी करने चाहिए जैसे कि वे लोग आरम्भ में करते थे।

इस पुस्तक में हम कुछ ऐसे निर्देश दे रहे हैं, जिन्हें माना जा सकता है। यह पुस्तक कोई धर्मसार नहीं है। और इस में लिखी बातें किसी कौंसिल या कॉंफ्रेन्स में बनाए गए मनुष्यों के आदेश नहीं है। इस में लिखी बातें उन लोगों के लिये हिदायत की तरह हैं जो केवल सच्चाई पर ही चलना चाहते हैं, और जो केवल बाइबल को ही एकमात्र धार्मिक अधिकार मानकर चलना चाहते हैं, और प्रभु के लोगों की स्वाधीन मण्डलियाँ आरम्भ करना चाहते हैं। ये स्वाधीन मंडलियां, प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार चलकर, उस में एक कलीसिया बनकर रहती हैं। अपनी एकता की पहचान को बनाए रखने के लिये वे मंडलियां केवल उन्हीं मण्डलियों के साथ सहभागिता रखती हैं जो विश्वास और मत में उन के साथ सहमत हैं, और सब मिलकर बाइबल से सहमत हैं।

मसीह की सच्ची कलीसिया क्या है ?

कलीसिया उन सब लोगों की एक मण्डली है जिन्हें मसीह ने "अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।" (१ पतरस २:९)। वह एक आत्मिक देह है, जिसमें वे सब लोग हैं जिन्हें उद्धार मिला है।

मसीह की कलीसिया को बड़ी ही आसानी से पहचाना जा सकता है। उसे पहचानने के निशानों को और उसकी शिक्षाओं को नए नियम में इतने अलग ढ़ंग से बताया गया है, कि उन सब सम्प्रदायों और मंडलियों के बीच में भी जिनका आधार मनुष्यों के आदेश तथा उपदेश हैं, उसे बड़ी ही आसानी से अलग पहचाना जा सकता है।

प्रभु को केवल एक ही कलीसिया की आवश्यकता थी। वह जानता था कि वह एक ही कलीसिया में सब का उद्धार कर सकता है। सो उसने केवल एक ही को बनाया है। उसे दो या दो से अधिक कलीसियाएं बनाने की क्या आवश्यकता हो सकती थी ?

लेकिन इंसान ने, जिसने सदा ही से परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया है, मसीह की कलीसिया को भी बदलने का प्रयत्न किया है। मनुष्य ने परमेश्वर की उपासना में कुछ ऐसी बातों को जोड़ा है जिनका परमेश्वर के वचन में स्पष्ट आदेश नहीं मिलता। और उसने कुछ ऐसी बातों को हटा दिया है, जिन्हें परमेश्वर वास्तव में चाहता है। फिर, कुछ बातों को, जिन्हें परमेश्वर ने अपनी कलीसिया में आरम्भ में रखा था, मनुष्य ने अपनी इच्छानुसार बदल डाला है।

परंतु इन सब प्रयत्नों के द्वारा मनुष्य को केवल यही सफलता मिली है, कि फलस्वरुप आज पृथ्वी पर नाना प्रकार के ऐसे-ऐसे सम्प्रदाय मौजूद हैं जिन्हें इसलिये मसीहियत का नाम दिया है ताकि उनमें जिन बातों को माना जाता है वे ऐसी प्रतीत हों मानों वे सब परमेश्वर की ही ओर से हैं। परंतु मसीह की कलीसिया को बदलने में मनुष्य सफल नहीं हुआ है। वह आज भी वैसे ही मौजूद है।

सच्ची मसीह की कलीसिया आज भी, जैसे कि हमेशा से थी, और हमेशा रहेगी, उन लोगों की मण्डली है:-

1. जिन्होंने परमेश्वर के वचन की सही शिक्षा पाई है, और
2. जिन्होंने मसीह के सुसमाचार पर विश्वास किया है, और अपने पापों से मन फिराया है, और मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहकर अंगीकार किया है, और पवित्र शास्त्र की शिक्षा अनुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है और,
3. जो परमेश्वर की उपासना उसी के दिए आदेशों से करते हैं। उसकी आज्ञाओं को, बिना कुछ भी जोड़े, बिना कुछ भी घटाए और बिना किसी तरह के परिवर्तन के मानते हैं, और,
4. जो अपने प्रेम को प्रभु के प्रति अपनी सच्ची सेवा से तथा उसकी आज्ञाओं पर चलकर व्यक्त करते हैं।

परमेश्वर की इच्छा को हम कैसे जान सकते हैं?

क्या परमेश्वर ने अपनी इच्छा को लोगों पर प्रकट किया है?

बाइबल के पुराने नियम में जिन बातों को आज हम पढ़ते हैं, वे सब बातें उस समय उन लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा थीं जो मसीह की मृत्यु से पूर्व रहते थे। उनके नियम, उनके धार्मिक रिवाज, और उनके बलिदान, सब मूसा की व्यवस्था से थे। परंतु मूसा की व्यवस्था उस समय समाप्त हो गई थी जब यीशु क्रूस पर मरा था। (कुलुस्सियों २:१४,१५)। और उसी समय एक नए नियम का आरंभ हुआ था। (इब्रानियों ९:१५; १०:९,१०)। इसीलिये आज हम मूसा की व्यवस्था के आधीन नहीं हैं। किन्तु हमारी अगुवाई के लिये हमें आज नया नियम दिया गया है।

आज बाइबल के नए नियम में से जब कोई पढ़ता है, तो यह ऐसे ही है मानों परमेश्वर उस से बोल रहा है। यह बात हमारे लिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया था उसके बारे में हमें केवल नए नियम में ही मिलता है। और इसीलिये इस संबंध में हम केवल नए नियम से ही देखेंगे।

नए नियम में लिखी बातें परमेश्वर की इच्छा हैं, यह सच्चाई इस बात से भी स्पष्ट हो जाती है कि उसी ने हमें चेतावनी देकर कहा है, "कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना।" (१ कुरिन्थियों ४:६)। हमें मना किया गया है कि उस सुसमाचार को छोड़ जो आरम्भ में सुनाया गया था "कोई और सुसमाचार" हम न सुनाएँ। (गलतियों १:८,९)। वह कहता है, कि कोई न तो "इन बातों में कुछ बढ़ाए" और न "इस भविष्यवाणी की पुस्तक में से कुछ निकाल डाले।" (प्रकाशितवाक्य २२:१८,१९)। वह हमें चेतावनी देकर कहता है कि "बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (१ यूहन्ना ४:१)। और वह कहता है, कि जो मनुष्य "मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता" उसके साथ हम सहभागिता न रखें। (२ यूहन्ना ९-११)।

नए नियम में हमारे लिये परमेश्वर के वे आदेश हैं जिन्हें आज हमें मानना चाहिए। जब पौलुस ने थिस्सलुनिके में कलीसिया को लिखा था तो उसने उन की इस बात के लिये प्रशंसा की थी कि उन्होंने उस वचन को, जो उसने उन्हें सुनाया था, भली प्रकार ग्रहण किया था। उस ने उन से कहा था कि "तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परंतु परमेश्वर का वचन समझकर ग्रहण किया" है। (१ थिस्सलुनीकियों २:१३-१५)।

परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्यों पर बाइबल के द्वारा प्रकट किया है। इसीलिये पौलुस कहता है, कि विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने से आता है। (रोमियों १०:१७)।

आज परमेश्वर स्वयं किसी भी मनुष्य से बातें नहीं करता है। वह प्रत्येक मनुष्य से केवल अपनी बाइबल के द्वारा ही बातें करता है। इस पुस्तक में उसकी सम्पूर्ण इच्छा सदा के लिये लिखी जा चुकी है।

वचन को ठीक रीति से काम में लाना

यह समझने के लिये, कि परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी कौन सी बातें आज हमारे ऊपर लागू होती हैं, यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाएं। (२ तीमुथियुस २:१५)।

वास्तव में बाइबल छियासठ पुस्तकों की एक पुस्तक है। इन पुस्तकों को लगभग १६०० वर्षों में चालीस भिन्न-भिन्न लेखकों ने लिखा था। उन्होंने केवल उन्हीं बातों को लिखा था जिनको लिखने की प्रेरणा उन्हें परमेश्वर से मिली थी। उनमें से कुछ ने परमेश्वर के उन लोगों के इतिहास को लिखा था, जो मूसा की व्यवस्था के काल में रहते थे। कुछ ने उस समय के नियमों के ऊपर प्रकाश डाला है। और कुछ अन्य लेखकों ने मसीह और उसकी कलीसिया के विषय में पहले से की गई भविष्यवाणियों के बारे में भी लिखा है।

बाइबल की छियासठ पुस्तकों को दो मुख्य भागों में बांटा गया है - (१) पुराना नियम हमें आदम के समय से लेकर मसीह के जन्म से कुछ ही समय पूर्व तक की बातों के संबंध में बताता है - और (२) नया नियम, जिसमें लिखी बातों पर आज हमें विश्वास लाकर चलना चाहिए।

नए नियम की पहली चार पुस्तकें यीशु मसीह के जीवन से संबंधित, बातों पर लिखी गई हैं। यीशु के जीवन से संबंधित बातों को लिखनेवाले चार लेखक थेः मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना। वे यीशु के जन्म, उसके प्रारम्भिक जीवनकाल, लोगों के बीच में उसके सेवा के कार्यों, उसके द्वारा प्रेरितों को चुन लिये जाने तथा उसके आश्चर्यकर्मों, उसकी शिक्षाओं, कलीसिया को बनाने के विषय में की गई उसकी प्रतिज्ञा, उसे दोषी ठहराए जाने, उसके क्रूसारोहण, उसकी मृत्यु, उसके गाड़े जाने, तीसरे दिन उसके जी उठने, फिर से वापस आने की उसकी प्रतिज्ञा, उसके द्वारा चेलों को यह आज्ञा देना कि तुम जाकर सारी सृष्टि के सब लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, और फिर अंत में उसके स्वर्गारोहण के बारे में बताते हैं। ये पुस्तकें इसलिए लिखी गई थीं ताकि इन्हें पढ़कर लोग मसीह में विश्वास लाएँ। (यूहन्ना २०:३०-३१)।

फिर नए नियम की अगली किताब का नाम है, "प्रेरितों के कामों की पुस्तक।" इसमें हमें उन बारह चेलों के कामों का वर्णन मिलता है जिन्हें यीशु ने इसलिये चुना था कि उसके स्वर्गारोहण के बाद वे उसके उद्धार के सुसमाचार के काम को आगे बढाएंगे। इस पुस्तक को पढ़ने से हमें यह ज्ञान मिलता है, कि प्रेरितों ने किस प्रकार आरम्भ में सुसमाचार सुनाया था, आत्माओं को बचाया था, मंडलियों की स्थापना की थी, और उस समय के लोगों के बीच विभिन्न स्थानों में मंडलियों की उन्नति के लिये क्या-क्या कार्य किए थे। यह किताब हमें

यह भी बताती है, कि आरम्भ में लोग किस प्रकार मसीह के अनुयायी बने थे; उद्धार पाने के लिये उन्होंने क्या किया था; और कलीसिया में मिलाए जाने के बाद वे कैसे और कब उपासना किया करते थे। इस पुस्तक को इस उद्देश्य से लिखा गया था कि कलीसिया की स्थापना, उद्धार पाने, और प्रचार करने के संबंध में इस में लिखी बातें हमारे लिये आदर्श ठहरें।

नए नियम की बाकी की पुस्तकों को पत्रियों के रुप में कुछ व्यक्तियों या कलीसियाओं के नाम लिखा गया था। इन पत्रियों में ऐसी-ऐसी बातों का वर्णन मिलता है जिनसे हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक मसीही जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए, और कलीसिया में कौन से काम करने चाहिए और हमे कैसे मसीह की महिमा करनी चाहिए। (इफिसियों ३:२१)।

बाइबल का अध्ययन करना एक प्रकार से आराधना करने के समान है। बाइबल को पढ़ने से हम परमेश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करते हैं। इस प्रकार परमेश्वर मनुष्य से बोलता है। उसके वचन की पुस्तक को पढ़ने से हमें उसकी इच्छा का ज्ञान मिलता है। और हम यह भी सीखते हैं कि उसकी कलीसिया क्या है और उसे कैसे आरम्भ किया जा सकता है। लगभग दो हजार वर्षों से वे लोग ऐसा ही करते आ रहे हैं, जो केवल परमेश्वर की ही इच्छा पर चलना चाहते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि....

हम कौन हैं ?

हम मनुष्य हैं, जिसे आरम्भ में परमेश्वर की समानता तथा स्वरुप पर बनाया गया था (उत्पत्ति १:२६,२७)। परमेश्वर ने पहिले मनुष्य, आदम, को भूमि की मिट्टी से रचा था और फिर उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंका था, "और आदम जीवता प्राणी बन गया" था। (उत्पत्ति २:७)।

हमारे शरीर मिट्टी से बने हुऐ हैं, और मृत्यु पश्चात् वे मिट्टी में ही फिर मिल जाते हैं (उत्पत्ति ३:१६), परंतु हमारे पास एक अमर आत्मा है जिसे हमने परमेश्वर से पाया है, और मृत्यु के समय वह "परमेश्वर के पास --- लौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२:७)।

हम यहां क्यों है?

हम यहां इसलिये हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें बनाया है और उसने हमें एक काम करने को दिया है। पौलुस ने कहा था कि सारी वस्तुएं (मनुष्य भी) "उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।" (कुलुस्सियों १:१६)। वह "हर एक को उसका काम" देता है, (मरकुस १३:३४), और जो काम वह हमें करने को देता है उसे पूरा करके हम उसकी महिमा कर सकते हैं। (यूहन्ना १७:४)।

जब हम इस संसार को छोड़ते हैं, तो हम यहां से कहां चले जाते हैं?

यदि हम परमेश्वर के प्रति विश्वासी बने रहकर उसकी सेवा करते हैं, तो

वह हमें अपने साथ स्वर्ग में रहने के लिये वापस बुला लेता है। यदि हमने जीवन में उसकी आज्ञाओं को नहीं माना है, तो हम नरक में अनन्त दण्ड भोगने के लिये चले जाएंगे।

जब हमारे जीवन का अन्त हो जाएगा, तो केवल दो ही ऐसे स्थान हैं अनन्तकाल में जिनमें से एक में हम अवश्य जाएंगे। एक जगह है स्वर्ग। यह अच्छी जगह है। वह आनन्द, शांति और प्रसन्नता का स्थान है। स्वर्ग वह जगह है जहां परमेश्वर बास करता है। (यूहन्ना १४:१-३)।

एक और जगह है, जिसका नाम नरक है। यह बुरा स्थान है। जिन्होंने बुराई की है और अपनी मनमानी करके चले हैं उन सब को इसी जगह स्थान मिलेगा और वहां वे हमेशा का दण्ड पाएंगे। (प्रकाशितवाक्य २१:८)।

बाइबल मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या पर प्रकाश डालती है, और उसका समाधान भी बताती है

पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का आरम्भ निष्कलंक होता है। कोई भी मनुष्य पापी उत्पन्न नहीं होता है। जबकि बहुतेरे यह सिखाते हैं, कि इंसान जन्म से ही पापी उत्पन्न होता है, परंतु बाइबल ऐसी शिक्षा नहीं देती। वास्तव में, बाइबल इसके बिल्कुल विपरीत सिखाती है। बाइबल यह सिखाती है, कि आदम के पाप का परिणाम तो हमारे शरीरों पर पड़ता है (उत्पत्ति ३:१७-१६), परंतु उसका दोष हम पर नहीं आता है। (यहेजकेल १८:२०)। हमारे शरीर आदम से निकले हैं, परंतु आत्मा को हमने परमेश्वर से पाया है। (इब्रानियों १२:६)। क्या परमेश्वर मनुष्य को ऐसी आत्मा देता है जिस पर पहिले ही से किसी दूसरे के पाप का दोष लगा है, और फिर उसे पापरहित लौटने को कहता है ? नहीं।

जब एक बालक का जन्म होता है, तो वह परमेश्वर से दूर नहीं होता है। यदि वह अपने जन्म से ही पापी होता है तब तो वह प्रभु से पहिले ही दूर होता है। किन्तु, बालक अपने जन्म से ही पापी नहीं होता है। इसलिये यदि वह बालावस्था में ही मर जाए तो वह स्वर्ग में जाएगा। क्योंकि उसने स्वंय कोई पाप नहीं किया है। (मत्ती १८:३)।

अब यद्यपि एक बालक अपने जन्म से तो निष्पाप होता है, परंतु वह हमेशा के लिये निष्पाप नहीं रहता है। बालावस्था से पार होकर जब वह बड़ा हो जाता है, तो वह अच्छाई और बुराई के बीच में अन्तर को समझने लगता है। बुराई को जानते हुए भी जब वह बुराई करता है, तो वह पाप करता है। और पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग हो जाता है। (यशायाह ५९:१,२)। परमेश्वर से एक बार अलग हो जाने के बाद मनुष्य स्वंय अपने आप परमेश्वर के पास वापस नहीं आ सकता। उसे सहायता की आवश्यकता है। परमेश्वर मनुष्य को प्यार करता है, और इसीलिये अपने अनुग्रह से उसने मनुष्य को पाप से छुटकारा पाने के लिये एक मार्ग प्रदान किया है। जब मनुष्य को पाप से छुटकारा मिल जाता है, तो वह पहले ही की तरह फिर से परमेश्वर के पास वापस आ जाता है।

पवित्र बाइबल के अनुसार, केवल यीशु मसीह का लोहू ही मनुष्य के पाप को दूर कर सकता है। जब मनुष्य अपने पापों को मसीह के लोहू में धो लेता है, तो उसका संबंध फिर से परमेश्वर के साथ स्थापित हो जाता है। जन्म के समय मनुष्य का संबंध परमेश्वर से रहता है। परंतु जब मनुष्य बड़ा होकर पाप करता है तो परमेश्वर से उसका संबंध टूट जाता है। किन्तु, "नया जन्म" लेकर वह फिर से अपना संबंध परमेश्वर के साथ स्थापित कर सकता है। (यूहन्ना ३:३,५)।

जब मनुष्य यह जान लेता है कि उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है, और अपने पाप के कारण उस से अलग हो गया है, तो उसे मालुम होना चाहिए कि उसे:-

क्षमा मिल सकती है

क्षमा प्राप्त की जा सकती है, परंतु परमेश्वर की अन्य आशीषों की तरह ही उसकी यह आशीष भी उसकी इच्छा से ही प्राप्त की जा सकती है। प्रभु की क्षमा को प्राप्त करने के लिये उसकी इच्छा को मानना आवश्यक है। (इब्रानियों ५:८)। मनुष्य अपनी मर्जी पर चलकर परमेश्वर से क्षमा प्राप्त नहीं कर सकता (रोमियों १०:१-३)। हमने स्वंय परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है,

और इसलिये उसके पास यह पूरा अधिकार है कि वह हमें बताए कि हमें क्षमा कैसे मिल सकती है। उसने कहा है:-

१. यदि कोई मनुष्य उसमें और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करेगा (इब्रानियों ११:६), और,

२. विश्वास उसमें लाकर, अपने पापों से मन फिराएगा, अर्थात् भविष्य में अपने चाल-चलन को बदलकर अपने जीवन को परमेश्वर के वचन की बातों के अनुसार बनाने का निश्चय करेगा, और,

३. यदि वह यह अंगीकार करेगा, (रोमियों १०:१०), कि मुझे विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और मेरे जीवन का प्रभु तथा स्वामी है, और,

४. फिर, यदि वह अपने पापों की क्षमा के लिये पिता और पुत्र और पवित्र-आत्मा के नाम से जल में बपतिस्मा लेगा (मती २८:१८-२०; प्रेरितों २:३८), तो उसका उद्धार होगा।

ये चार बातें बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं, और उद्धार पाने के लिये इनका पालन करना हर एक इंसान के लिये बड़ा ही आवश्यक है। परमेश्वर की उपरोक्त आज्ञाओं को मानने से मनुष्य क्षमा पाने के योग्य हो जाता है, परंतु उसे पाप से छुटकारा केवल तभी मिलता है जब वह बपतिस्मा लेने के द्वारा "धुल जाता है।" (प्रेरितों २२:१६)। पानी पापों को नहीं धोता है, पर यीशु मसीह के लोहू से हमारे पाप धुलते हैं। (प्रकाशितवाक्य १:५)। परन्तु कब ?

ध्यान दें:- बाइबल की शिक्षानुसार:

मनुष्य जब सुसमाचार में विश्वास करता है, और मसीह के नाम का अंगीकार करता है, और अपने पापों से मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये जल में बपतिस्मा लेता है, तो उसका पाप से उद्धार होता है। (मरकुस १६:१५,१६)। फिर, जब उसका उद्धार हो जाता है, तो उसी समय प्रभु उसे अपनी कलीसिया (मण्डली) में मिला लेता है। (प्रेरितों २:४७)।

बपतिस्मा लेने का क्या उद्देश्य है; और लेने से क्या होता है?

बपतिस्मा लेना एक साधारण सा काम है। बपतिस्मा आसानी से लिया जा सकता है। परंतु बपतिस्मे का महत्व बड़ा ही विशाल है।

बपतिस्मा लेना इसलिये आवश्यक है, क्योंकि बाइबल की शिक्षानुसार:

१. बपतिस्मा उद्धार पाने के लिये आवश्यक है। (मरकुस १६:१५,१६)।

२. बपतिस्मा लेने से पापों की क्षमा मिलती है। (प्रेरितों २:३८)।

३. बपतिस्मा मनुष्य को मसीह में मिलाता है। (रोमियों ६:१-४)।

४. बपतिस्मा लेकर मनुष्य मसीह को धारण करता है। (गलतियों ३:२७)।

५. बपतिस्मा बचाता है। (१ पतरस ३:२०,२१)।

मनुष्य का उद्धार करने के लिये यीशु मसीह ने जो कुछ भी किया था, मनुष्य को स्वयं उद्धार पाने के लिये उन्हीं बातों को मानने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ: यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया था, वह एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था, और फिर कभी न मरने के लिये। वह मुर्दों में से जी उठा था।(१ कुरिन्थियों १५:१-४)। ऐसे ही उद्धार पाने के लिए हम उस उपदेश के सांचे में ढाले जाते हैं। (रोमियों ६:१७)। जैसे कि मसीह पाप के कारण मर गया था, वैसे ही मनुष्य भी अपना मन फिराकर पाप के लिये मर जाता है। फिर, जिस प्रकार से मसीह की देह को एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था, उसी तरह से वह इंसान, जो मन फिराने के द्वारा पाप के लिये मर चुका है, पानी में बपतिस्मा लेने के द्वारा गाड़ा जाता है। और जिस तरह से यीशु कब्र में से जी उठा था, वैसे ही वह मनुष्य जो बपतिस्मा लेता है बपतिस्मे की जल-रुपी-कब्र में से बाहर निकलकर जी उठता है। और जैसे यीशु फिर कभी न मरने के लिए जी उठा था ऐसे ही जो मनुष्य बपतिस्मा लेता है वह भी "नए जीवन की सी चाल" चलने के लिये जी उठता है। (रोमियों ६:१-४)। सो इस प्रकार उद्धार की सम्पूर्ण योजना को उद्धार पानेवाला व्यक्ति स्वयं प्रभु की आज्ञा मानकर प्रदर्शित करता है।

जब यीशु ने नीकुदेमुस से यूं कहा था कि, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

(यूहन्ना ३:५)। तो यीशु के कथन का अभिप्राय पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने से ही था।

सब प्रकार की "आत्मिक आशीषें" मसीह में हैं (इफिसियों १:३), और क्योंकि बपतिस्मा मनुष्य को मसीह में शामिल करता है, (गलतियों ३:२७), इसलिये मसीह में होने के कारण उसे सब प्रकार की आशीषें मिलती हैं। सो, मसीह में होना कितनी बड़ी आशीष की बात है !

बपतिस्मा कैसे लें?

अब यदि बपतिस्मा लेने के उद्देश्य को आप अच्छी तरह से समझ गए हैं, तो आपको जल्दी ही बपतिस्मा ले लेना चाहिए।

बपतिस्मा कोई भी आदमी दे सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रचारक या कोई विशेष व्यक्ति ही किसी को बपतिस्मा दे। बपतिस्मा लेने के द्वारा जो लाभ मनुष्य को मिलता है, वह उसे उस व्यक्ति से नहीं प्राप्त होता है जो उसे बपतिस्मा दे रहा है, परंतु प्रभु की ओर से मिलता है। किंतु, यदि आप बपतिस्मा ले रहे हैं, तो आप को यह मालूम होना आवश्यक है, कि आप क्या कर रहे हें। यदि आप को कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता है जो आप को पवित्र शास्त्र की शिक्षा अनुसार, "बपतिस्मा में गाड़े" (कुलुस्सियों २:१२), तो हमारे पते पर लिखकर आप हमें बताएं। हम इस बात का पूरा प्रयत्न करेंगें कि आप को प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा दिया जाए। यदि बपतिस्मा लेने के समय अन्य लोग वहां मौजूद हों, तो उन्हें यह अवश्य बताया जाए कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं। क्योंकि हो सकता है कि उन में कोई ऐसा जन हो जो स्वंय भी प्रभु की आज्ञा को मानना चाहे।

बपतिस्मा लेने की विधि

जल के किसी ऐसे स्थान पर जाइए जहां कम से कम इतना पानी हो जिसमें यदि आप लेट जाएं तो आपका पूरा शरीर जल से ढक जाए। बपतिस्मा लेने का तात्पर्य गाड़े जाने से है। (रोमियों ६:४)।

पानी के भीतर, कमर तक पानी में खड़े हो जाएं। फिर जो व्यक्ति आप

को बपतिस्मा देने जा रहा है, वह आसानी के साथ आपकी देह को पानी में दफ़ना सकता है।

बपतिस्मा देनेवाला व्यक्ति ऐसी स्थिति में होता है कि वह आपकी देह को जल के भीतर गाड़कर उसे तुरन्त जल में से बाहर निकालकर आप को खड़ा कर सकता है। अब आप जल से बाहर निकलकर अपने कपड़े बदल सकते हैं।

नोटः- बाइबल की शिक्षानुसार सही बपतिस्मा केवल एक ही बार लिया जाता है। (इफिसियों ४:५)। यदि बपतिस्मा लेने के बाद मनुष्य से कोई पाप हो जाता है तो उस की क्षमा "मन फिराकर प्रार्थना" करने से मिलती है (प्रेरितों ८:२२) - दोबारा बपतिस्मा लेने से नहीं।

बपतिस्मा ले लेने के बाद

यदि आपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है, तो प्रभु ने आप को अपनी कलीसीया (मंडली) में मिला लिया है, (प्रेरितों २:४१,४७)। सो अब आप को एक ऐसा खज़ाना मिल गया है जिसे अन्य लोग भी प्राप्त कर सकते हैं। जो आप को मिला है उसे आप दूसरों को भी दें। क्योंकि उनके साथ उसे बांटने में आपका आनन्द और भी बढ़ जाएगा।

किन्तु, इस से पहिले कि आप अन्य लोगों को नए नियम की मसीहीयत के विषय में बताएं, यह बड़ा ही ज़रुरी है कि आप निश्चित रुप से यह जान लें कि आप स्वयं उसके बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। जो आप दूसरों को सिखाना चाहते हैं उसे पहले आप बाइबल के प्रकाश में अच्छी तरह से जांच लें, ताकि जो आप बताएं वह कोई गलत शिक्षा न हो, किन्तु बाइबल की शिक्षा के अनुसार ही हो।

सब बातों को अच्छी तरह से समझ लेने के बाद, अर्थात्, कलीसिया क्या है, और किस प्रकार उसका सदस्य बना जा सकता है, आप अपने सब मित्रों तथा संबंधियों को अपने उद्धार के संबंध में बता सकते हैं।

बाइबल में से पढ़कर आप उन्हें बता सकते हैं, कि पाप क्या है (१ यूहन्ना ३:४), और पाप का परिणाम क्या है (यशायाह ५९:१-२), और यह, कि यदि पाप में ही किसी की मृत्यु हो जाए तो वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जा सकता (यूहन्ना ८:२१)। आप उन्हें परमेश्वर के प्रेम के बारे बता सकते हैं (यूहन्ना ३:१६), और यह बता सकते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों के प्रति अपने प्रेम के कारण ऐसा संभव किया है कि वे मसीह के द्वारा अपने पापों से उद्धार पा सकते हैं। (रोमियों ५:८,१ यूहन्ना ४:१०)। आप उनका ध्यान इस बात पर दिला सकते हैं, कि यीशु ने कहा है कि, "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा

लेगा उसी का उद्धार होगा"। (मरकुस १६:१६)। आप उन्हें यह भी बता सकते हैं कि जब वे अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेंगे। (प्रेरितों २:३८) तो प्रभु उन्हें अपनी कलीसिया में अर्थात् अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली में मिला लेगा, जैसे कि उसने आपको मिला लिया है। (प्रेरितों २:४७)।

यह आप के लिये कितनी बड़ी खुशी की बात होगी कि आप अपने मित्रों और संबंधियों को "पुरुष और स्त्रियों" को (प्रेरितों ५:१४) प्रभु के वचन की शिक्षा देगें, और उन्हें बपतिस्मा देंगे।

अपने उद्धार को पाने से आनन्दित होकर मनुष्य कि यह इच्छा होती है, कि वह परमेश्वर की आराधना तथा स्तुति करे। वह अपने उद्धार के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहता है और इसलिये उसकी उपासना करना चाहता है।

आराधना कौन कर सकता है ?

मनुष्य अपने स्वभाव से ही एक उपासक है। उस से उपासना करने को कहने की आवश्यकता नहीं है। पर उसे यह जानने की आवश्यकता है, कि उपासना किसकी और कैसे करनी चाहिए।

जब कोई मनुष्य एक मसीही बन जाता है, तो वह स्वंय अकेले भी उपासना कर सकता है। परमेश्वर के साथ संगति रखने के लिये किसी विशेष संख्या में उसके पास आने की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु, फिर भी जब किसी एक स्थान में दो या दो से अधिक लोग कलीसिया के सदस्य बन जाते हैं तो उपासना करने के लिये उन्हें एक स्थान पर एक साथ जमा होना चाहिए। क्योंकि अब वे एक मण्डली हैं, अब अकेले उपासना करने का कोई कारण नहीं है।

उपासना कैसे करनी चाहिए ?

क्योंकि हमारी उपासना का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसी की स्तुति करना होता है, इसलिये परमेश्वर ही हमें बता सकता है कि

उसे प्रसन्न करने के लिये जो उपासना हम करते हैं, उसे कैसे करना चाहिए, और कब करना चाहिए, और किस तरीके से करना चाहिए। उपासना मनुष्य की नहीं, परंतु परमेश्वर की होनी चाहिए। इसलिये हमारा ध्यान, मनुष्य को नहीं परंतु, परमेश्वर को प्रसन्न करने की ओर होना चाहिए। जो वस्तु मनुष्य को अच्छी लगती है या मनुष्य के विचार में जिस बात से परमेश्वर प्रसन्न होता है, वही चीज "परमेश्वर के निकट घृणित" भी हो सकती है। (लूका १६:१५)। इसलिये उपासना करने की सभी विधियाँ परमेश्वर के वचन में लिखी बातों से पूरी तरह सहमत होनी चाहिए। (यूहन्ना १:१७; यूहन्ना ४:२४)।

यदि आराधना में हम कोई ऐसा काम करते हैं जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी है, तो इस से हम यह व्यक्त करते हैं कि परमेश्वर यह भी नहीं जानता कि उसे आराधना में किस वस्तु की आवश्यकता है। धार्मिक बातों के संबंध में किसी ऐसे काम को करना, जिसे करने की आज्ञा न तो परमेश्वर ने दी है और न उसके विषय में उसने मना किया हैं, यह मान लेना होगा कि जिस किसी बात के विषय में परमेश्वर ने नहीं बोला है वह मनुष्य कर सकता है।

परंतु हमें यह याद रखना चाहिए, कि बाइबल में जिन बातों को लिखा गया है वही परमेश्वर की इच्छा है। जो कुछ उसने इस पुस्तक में कहा है उसी को हमें उसकी मर्जी मानना चाहिए। और जो उसने नहीं कहा है उसे हमें ऐसे मानना चाहिए कि वह परमेश्वर की मर्जी है ही नहीं। अर्थात्, केवल वही बातें जिनका वर्णन नए नियम में विशेष रुप से हुआ है हमें परमेश्वर की आराधना में माननी चाहिए।

हमारी उपासना की सीमाओं को उसने न केवल अपनी आज्ञाओं से ही परन्तु नए नियम में वर्णित कलीसिया की उपासना के उदाहरणों से भी स्पष्ट रूप से हमें बताया है, और जो लोग "मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं" (मत्ती १५:९), उनकी उपासना को वह "व्यर्थ" की उपासना कहता है।

उपासना करने के पाँच नियम

आरम्भ में प्रभु की कलीसिया की सभी मंडलियां जिनकी आराधना को नए

नियम के पृष्ठों पर दर्शाया गया है, एक ही विधि से एक समान उसकी उपासना किया करती थीं। (१ कुरिन्थियों ७:१७)। प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हम उन लोगों के संबंध में यूं पढ़ते हैं, कि जब वे मसीह के अनुयायी बन गए थे, तो वे "प्रेरितों से शिक्षा पाने में, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों २:४२)। इन नियमों के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के लिये वे एक निश्चित समय पर निरन्तर मिला करते थे, और इस प्रकार वे अपनी आत्मिक सेवा में लौलीन रहते थे।

ऐसे ही आज हमें भी प्रभु की आराधना करनी चाहिए। और वास्तव में, बात तो यह है, कि यदि हम परमेश्वर की उपासना किसी और ही ढंग से करते हैं तो हम एक बहुत बड़ी गलती करते हैं। परमेश्वर की आराधना में "मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके" सिखाना और मानना परमेश्वर का सबसे बड़ा निरादर है। (मत्ती १५:९)।

प्रभु ने, विशेष रुप से, उपासना करने के निम्नलिखित पांच नियमों को ठहराया है, जिनका वर्णन हमे उसके नए नियम में मिलता है।

गीत गाना

एक प्रसन्नता भरे मन से गीत गाना स्वाभाविक बात है। (याकूब ५:१३)। आरम्भ में मसीही लोग परमेश्वर की प्रशंसा में, अपनी उपासना में, गीत गाते थे। (इफिसियों ५:१९)। वे भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाकर अपने मनों के विचारों को व्यक्त किया करते थे। (कुलुस्सियों ३:१६,१७)। किन्तु, जब वे गाते थे तो उनके गीतों के साथ किसी भी तरह के बाजे नहीं बजाए जाते थे। आरम्भ के मसीही लोग दाऊद द्वारा लिखे गए किसी एक भजन को या पवित्र शास्त्र के कुछ अन्य पदों को लेकर उनकी धुन या राग बना लेते थे और फिर उन्हें गाते थे। आज अक्सर संसार में सभी जगह मसीही गीत या भजनों की पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें से पढ़कर हम गा सकते हैं। परंतु यदि ऐसी पुस्तकें किसी जगह उपलब्ध न हों तो आरम्भ की कलीसिया की तरह हम भी आज कर सकते है, अर्थात्, धुन बनाकर किसी एक भजन को गा सकते हैं।

प्रार्थना करना

प्रार्थना एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर से बातें करता है। जब हम परमेश्वर की इच्छानुसार उस से प्रार्थना करते हैं तो वह हमारी सुनता है (१ यूहन्ना ५:१४), और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब भी देता है। (१ पतरस ३:१२)। प्रार्थना करने का अभिप्राय परमेश्वर को मनाने से नहीं है, परंतु प्रार्थना के द्वारा हम इस बात को प्रकट करते हैं कि हम उस पर भरोसा करते हैं और उस पर निर्भर रहते हैं। हमें सदैव विश्वास के साथ, यह मानकर,कि जो हम मागेंगे हमें मिलेगा, प्रार्थना करनी चाहिए। परंतु हमें सदा यह कहना चाहिए कि "मेरी नहीं परंतु तेरी ही इच्छा पूरी हो।" (लूका २२:४२)। हमें अपनी प्रार्थना को मसीह के नाम से मांगना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में केवल वही हमारा बिचवई है। (१तीमुथिमुय २:५; इफिसियों ५:२०)।

बाइबल अध्ययन करना

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना या उसे पढ़ना उपासना करने की एक महान विधि है। परमेश्वर की मर्ज़ी को जानकर उस पर चलने की इच्छा को मन में रखना मनुष्य के लिये प्रभु की ओर से एक बहुत बड़ी आशीष की बात है। (यूहन्ना ७:१७)। बाइबल के एक लेखक ने बिरीया में रहनेवाले चेलों को "भले" कहकर इसलिये संबोधित किया था क्योंकि वे "प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में से ढूंढ़ते" थे। (प्रेरितों १७:११,१२)।

चंदा देना

परमेश्वर के कार्य के लिये अपने धन में से देना भी उसकी आराधना है। फिलिप्पी नामक स्थान में जो कलीसिया थी उसकी ओर से पौलुस को, सुसमाचार प्रचार करने के कार्य के लिये, चंदा इकट्ठा करके भेजा गया था। और पौलुस ने उस चंदे के विषय में यूं कहा था, कि "वह तो सुगंध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है।" (फिलिप्पियों ४:१५-१६)। अपने चंदे के द्वारा हम सुसमाचार प्रचार करने के महान कार्य में सहायक बनते है। चंदा देकर हम कलीसिया को इस योग्य बनाते हैं, कि वह ग़रीबों की सहायता कर सके (१ कुरिन्थियों १६: १,२), और अन्य आर्थिक भार उठा सके (जैसे कि कलीसिया के जमा होने के स्थान का किराया,

आदि), या उन वस्तुओं को मोल ले सके जिनकी कलीसिया को आवश्यकता हो सकती है (जैसे कि बाइबल, मसीही साहित्य, आदि)।

किन्तु प्रभु उन से प्रसन्न होता है जो उसके कार्यों के लिए हर्ष से देते हैं (२ कुरिन्थियों ९:७), वह हमारे देने से हमारे "प्रेम की सच्चाई" को परखता है। (२ कुरिन्थियों ८:८)।

मूसा की व्यवस्था के आधीन यहूदी लोगों को अपनी आमदनी का दसवां भाग प्रभु को देने की आज्ञा दी गई थी। आज एक मसीही को कितना चन्दा देना चाहिए इसके लिये प्रभु ने कोई विशेष सीमा नियुक्त नहीं की है। उसने मनुष्य को स्वतंत्रता दी है, और केवल "उदारता से देने" की आज्ञा दी है (रोमियों १२:८), और कहा है, कि प्रत्येक अपनी "आमदनी" के अनुसार दे। (१ कुरिन्थियों १६:२)।

प्रभु-भोज लेना

जब आराधना में प्रभु भोज लिया जाता है तो वह एक गम्भीरता का समय होता है। प्रभु यीशु ने अपने दुखों और पापियों के लिये अपनी मृत्यु को याद दिलाने के लिये इस "भोज" की स्थापना की थी। प्रत्येक मसीही जन को प्रभु यीशु के उस बलिदान को स्मरण रखने के लिये, जिसे उसने हमारे पापों के लिये दिया था, हर एक रविवार (एतवार) को प्रभु-भोज में अवश्य ही भाग लेना चाहिए।

प्रभु-भोज को लेने के समय, रोटी को लेकर उसके लिये धन्यवाद देना चाहिए, और फिर मसीह की देह को याद करने के लिये उस रोटी में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़कर खाना चाहिए। यह रोटी अखमीरी, अर्थात् खमीर के बिना होनी चाहिए। फिर, उस गिलास या प्याले को लेकर जिसमें "दाखरस" (अंगूर का रस) है उस के लिये धन्यवाद देना चाहिए और उस दाखरस में से मसीह के लोहू को याद करने के लिए थोड़ा सा पीना चाहिए। (मत्ती २६:२६-२८; १कुरिन्थियों ११:२३-३४)।

प्रभु-भोज प्रत्येक "सप्ताह के पहिले दिन" अर्थात् रविवार को लिया जाता है। (प्रेरितों २०:७; तथा २:४२)। केवल यही एक ऐसा दिन है जिस में प्रभु-भोज लिया जाना चाहिए। और किसी दिन उसे नहीं लेना चाहिए।

प्रभु-भोज में भाग लेने के उद्देश्य को प्रभु यीशु ने स्वयं ही बड़े अच्छे ढंग से अपने इन शब्दों में यह कहकर व्यक्त किया था, कि "मेरे स्मरण के लिये यही किया करो"। (१ कुरिन्थियों ११:२५)। रोटी में से खाना "मसीह की देह की सहभागिता" है, और दाखरस में से पीना "मसीह के लोहू की सहभागिता" है। (१कुरिन्थियों १०:१६)। प्रभु-भोज प्रभु के बलिदान की एक यादगार है।

प्रभु-भोज लेने से पाप नहीं मिटते हैं, परंतु उस में भाग लेकर हम इस बात को "व्यक्त" या "घोषित" करते हैं, कि मसीह ने अपने आपको हमारे पापों के लिए बलिदान किया था। प्रभु-भोज को ऐसे नहीं लेना चाहिए कि वह कोई "पवित्र प्रसाद" है। परंतु उस में भाग लेकर मसीह की देह और उसके लोहू को याद करना चाहिए।

जब एक मसीही व्यक्ति अन्य मसीही भाई-बहनों के साथ एकत्रित नहीं होता है और उनके साथ प्रभु-भोज में सहभागी नहीं होता है, तो ऐसा करके वह पाप करता है, (इब्रानियों १०:२५)। यदि कोई मसीही किसी कारणवश प्रभु के दिन, अर्थात् सप्ताह के पहिले दिन, (प्रेरितों २०:७), अपने अन्य मसीही भाई-बहनों के साथ इकट्ठा नहीं हो सकता, तो ऐसा होना चाहिए, यदि संभव हो, कि वह अकेले ही प्रभु-भोज को ले।

अखमीरी रोटी

प्रभु-भोज में जिन दो वस्तुओं को इस्तेमाल किया जाता है, उनमें से एक वस्तु है "अखमीरी रोटी"। जिस समय यीशु ने इस यादगार की स्थापना की थी, उस वक्त यहूदी लोग "अखमीरी रोटी का पर्व" मना रहे थे। (मत्ती २६:१७)। यीशु और उसके चेले भी उसी पर्व के अवसर पर एक जगह एकत्रित हुए थे। और यीशु ने उस समय अखमीरी रोटी का एक टुकड़ा अपने हाथ में लेकर उसके लिये धन्यवाद दिया था और फिर उसमें से तोड़कर अपने चेलों को देकर कहा था, कि मेरी देह को स्मरण करने के लिए इसमें से खाओ।(मत्ती २६:२६-२८)। यही कारण है कि हम प्रभु-भोज में अखमीरी रोटी का इस्तेमाल करते हैं।

अखमीरी रोटी को आसानी से बनाया जा सकता है। जिस प्रकार से रोटी या चपाती बनाई जाती है उसी तरह से इसे बनाया जाता है। परंतु इस

बात का ध्यान रखना चाहिए कि आटे में खमीर न मिलाया जाए: यही कारण है कि प्रभु-भोज में डबलरोटी को उपयोग में नहीं लाया जा सकता, क्योंकि उसमें खमीर होता है।

दाख-रस

प्रभु-भोज में दूसरी आवश्यक वस्तु है "दाखरस", अर्थात अंगूर का रस। जिस रात को यीशु, अपने क्रूसारोहण से पूर्व, पकड़वाया गया था उसमे न केवल उसने अपने चेलों को अखमीरी रोटी ही खाने को दी थी: परंतु यीशु ने उस समय एक प्याला भी अपने हाथ में उठाया था - उसमें दाखरस था। यीशु ने उसे लेकर उसके लिये धन्यवाद दिया था और फिर अपने चेलों से कहा था, कि तुम सब इसमें से पीओ, और जो लोहू मैं तुम्हारे पापों की क्षमा के लिये क्रूस पर बहाने जा रहा हूं, उसे स्मरण करने के लिये तुम ऐसा ही किया करना।

अंगूर एक ऐसा फल है जो संसार के सभी भागों में प्रायः उपलब्ध है। इसलिये यीशु ने अपने लोहू की यादगार के लिये एक ऐसे फल के रस को ठहराया है जो दुनिया में सभी जगह मिलता है। जब मसीही लोग प्रत्येक रविवार (इतवार) के दिन एकत्रित होकर प्रभु-भोज में भाग लेते हैं, तो ऐसा करके वे यीशु के प्रति उसकी मृत्यु के लिये अपने धन्यवाद को प्रकट करते हैं। यदि कोई मसीही व्यक्ति "सप्ताह के पहिले दिन" अन्य मसीही लोगों के साथ एकत्रित नहीं होता है, जबकि वह ऐसा कर सकता है, तो प्रत्यक्ष ही है कि वह मनुष्य मसीह के बलिदान के लिये धन्यवादी नहीं है।

यद्यपि अंगूर का रस बाज़ार से खरीदा जा सकता है, परंतु यदि उपलब्ध न हो तो अंगूर लेकर उनका रस निकाल लें। एक अच्छा तरीका यह भी है, कि अंगूर के मौसम में रस निकालकर रख लिया जाए और पूरे वर्ष उसे उपयोग में लाया जा सकता है, यदि उसे खराब होने से बचाया जा सके।

अकसर कुछ लोग किशमिश (सूखे अंगूर) लेकर पानी में उबाल लेते हैं और फिर उस में से रस निकालकर उसे इस्तेमाल करते हैं। यह भी एक सरल और अच्छी विधि है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रभु-भोज में, पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार, मसीह की देह और उसके लोहू को स्मरण करने के

लिये, अखमीरी रोटी और दाख-रस को ही उपयोग में लाना चाहिए।

अपने ही घर में आप स्वयं मसीह की कलीसिया का आरम्भ कर सकते हैं

अब, जब कि नए नियम की कलीसिया के संबंध में आप ने आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ली है, तो अब आप स्वंय अपने ही घर में मसीह की कलीसिया का आरम्भ कर सकते हैं। यदि आप के आस-पास कहीं पर भी मसीह की मण्डली नहीं है। तो या तो आप स्वयं अपने ही घर में या फिर अपने इलाके में किसी और स्थान पर नए नियम की शिक्षानुसार एक मण्डली का आरम्भ कर सकते हैं। किन्तु, यदि सच्ची कलीसिया वहां पहिले ही से विद्यमान है, तो फिर वहीं पर एक और मण्डली का आरम्भ करना कदाचित उचित न हो।

इस बात का ध्यान रखना बड़ा ही आवश्यक है, कि आप उन धार्मिक संगठनों (साम्प्रदायिक कलीसियाओं) से सावधान रहें जो यद्यपि मसीह के अनुयायी होने का दावा तो करते हैं, लेकिन न तो उस के वचन को मानते हैं, और न ही उसकी शिक्षाओं पर चलते हैं। यह बात उनकी उपासना से और जिस नाम से वे कहलाते हैं बड़ी ही स्पष्टता से देखी जा सकती है। (२ यूहन्ना ९-११)।

अब, यदि आपने मसीह की शिक्षा को मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है, और यदि आपने अन्य लोगों को मसीह का सुसमाचार सिखाकर उन्हें बपतिस्मा दे दिया हैं, तो आप को चाहिए कि आप प्रत्येक रविवार को उपासना के लिए एक ऐसा समय निश्चित करें जो सबके लिये उपयुक्त हो। उपासना करने के लिये कलीसिया आप के घर में एकत्रित हो सकती है, या फिर किसी अन्य स्थान पर मिला जा सकता है। आराधना में गीत गाकर प्रभु की प्रंशसा करनी चाहिए और मसीह के नाम के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर पवित्र बाइबल में से कुछ पढ़कर उसके अर्थ को स्पष्ट शब्दों में उपस्थित लोगों को समझाना चाहिए। और फिर, प्रभु-भोज में, जिसे पहिले से भली प्रकार तैयार करके रख दिया जाता है, भाग लेना चाहिए। सब से पहिले, प्रभु-भोज लेते समय, रोटी के लिये धन्यवाद दिया

जाए और फिर उसे उन सब को दिया जाए, जिन्होंने बपतिस्मा ले लिया है, ताकि वे सब उसमें से थोड़ा-थोड़ा सा टुकड़ा तोड़कर खाएं और मसीह की देह को स्मरण करें। फिर, ऐसे ही दखरस के लिए भी धन्यवाद दिया जाए और जिस प्याले या गिलास में वह है उसमें से पीने के लिये कलीसिया के सभी सदस्यों को दिया जाए, मसीह के लोहू को स्मरण करने के लिये। उपासना सभा में प्रार्थना की जानी चाहिए। फिर, चंदा इकट्ठा किया जाना चाहिए, प्रत्येक अपनी आमदनी के अनुसार हर्ष के साथ दें। प्रत्येक रविवार के चंदे को एक कॉपी में लिख देना चाहिए ताकि कलीसिया की बढ़ौत तथा उन्नति के लिये उसका इस्तेमाल किया जाए।

आप को इस बात के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए कि आस-पास और सब जगह आप लोगों को मसीह का सुसमाचार सुनाएं। आरम्भ के मसीही लोगों के बारे में बाइबल बताती है कि वे "घूम-घूमकर वचन का प्रचार करने लगे"। (प्रेरितों ८:४)।

कलीसिया किस प्रकार संगठित है ?

प्रभु की कलीसिया की प्रत्येक मंडली स्वतंत्र है। एक मण्डली के ऊपर किसी भी दूसरी मण्डली का अधिकार नहीं है। प्रत्येक मण्डली स्वाधीन है। कलीसियाएँ एक साथ संगठित नहीं हैं, और न ही कलीसिया के स्थानीय संगठन से बढ़कर और कोई संगठन है। यह बाइबल की शिक्षा है।

बाइबल में कलीसिया को "मसीह की देह" कहकर संबोधित किया गया है। इन शब्दों से यह व्यक्त होता है कि "मसीह देह (कलीसिया) का सिर" है। (कुलुस्सियों १:१८; इफिसियों १:२२)। और व्यक्तिगत रुप से मसीही लोगों को "उसकी देह के अंग" कहा गया है। (१ कुरिन्थियों १२:२०)। जिस प्रकार से हमारी शारीरिक देह में प्रत्येक अंग का अपना एक विशेष कार्य होता है, ऐसे ही मसीह की देह में भी है। कलीसिया का कोई भी सदस्य किसी दूसरे सदस्य से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। कलीसिया में सभी लोग महत्वपूर्ण हैं, और सभी अंगों का देह में अपना - अपना स्थान है, जिनके द्वारा सम्पूर्ण देह, अर्थात् कलीसिया, संगठित होती है। मसीह की कलीसिया में सभी लोग आपस में भाई और बहन हैं।

लेकिन इस बात को हमें याद रखना चाहिए कि कलीसिया का सिर मसीह है, और इस कारण सारा का सारा अधिकार केवल उसी के पास है। कलीसीया के नमूने को कोई भी इंसान नहीं बदल सकता, क्योंकि किसी भी मनुष्य को ऐसा करने का अधिकार नहीं दिया गया है। अधिकार सारा केवल यीशु मसीह के ही पास है।

किन्तु आनेवाले वर्षों में मसीह की कलीसिया की एक मण्डली जब किसी स्थान पर गिनती में और आत्मिक रुप से मजबूत हो जाती है, तो उस मण्डली में से कुछ योग्य आदमियों को चुनकर उन्हें मण्डली में अध्यक्ष अर्थात् बुजुर्ग नियुक्त किया जाना चाहिए। उन आदमियों का चुनाव स्वंय मण्डली के सदस्यों को ही करना चाहिए। बाइबल में अध्यक्षों को "रखवाले" या "चरवाहे" कहकर भी संबोधित किया गया है। (१ पतरस ५:१-५)। उनका काम मण्डली के सदस्यों की आत्मिक चौकसी या रखवाली करने का होता है।

अध्यक्षों या रखवालों को ही अंग्रेज़ी की बाइबल में "बिशप" और "पास्टर" कहकर भी संबोधित किया गया है। और बाइबल के अनुसार प्रत्येक मण्डली में बहु-संख्या में, अर्थात एक से अधिक अध्यक्षों (प्राचीनों) को नियुक्त किया जाना चाहिए। किसी भी मण्डली में एक अध्यक्ष (बिशप या पास्टर) नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। (फिलिप्पियों १:१; प्रेरितों १४:२३)। बाइबल में प्रचारकों को पास्टर कहकर संबोधित नहीं किया गया है। जिस तरह के लोगों को मण्डली में से चुनकर मण्डली में अध्यक्ष या प्राचीन (बिशप या पास्टर) नियुक्त किया जाना चाहिए उनकी योग्यताओं के बारें में हमें १ तीमुथियुस ३:१-७ और तीतुस १:५-९ में मिलता है।

इसी प्रकार अध्यक्षों के काम में हाथ बटाने के लिए मण्डली में से चुन-कर कुछ आदमियों को मण्डली में सेवक नियुक्त किया जाना चाहिए। (फिलिप्पियों १:१; प्रेरितों २०:२८)। सेवकों में कौन-कौन सी योग्यताएं होनी चाहिए, इस संबंध में हमें १ तीमुथियुस ३:८-१३ में मिलता है।

किसी भी जगह पर मसीह की मण्डली (कलीसिया) का आरम्भ कुछ विश्वासियों के साथ होता है - वे जो मसीह के सुसमाचार को सुनकर उस में विश्वास लाते हैं और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु की आज्ञानुसार पानी में बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें मसीह

अपनी कलीसिया में मिला लेता है। धीरे-धीरे वह स्थानीय कलीसिया गिनती में और आत्मिक रूप में बढ़ने लगती है। कुछ वर्षों के बाद जब उस कलीसिया में कुछ ऐसे आदमी पाए जाते हैं जो उम्र में बड़े होते हैं, और गम्भीर और समझदार होते हैं और प्रभु के वचन को सिखाने मे निपुण और अच्छे चाल-चलन के होते हैं। अर्थात ऐसे मसीही जो बाइबल की शिक्षानुसार कलीसिया में अध्यक्ष या रखवाले नियुक्त किये जा सकते हैं, तो कलीसिया के सदस्यों की आत्मिक देखरेख के लिये उन्हें कलीसिया में नियुक्त किया जाना चाहिए।

लगभग मुफ़्त

बाइबल प्रवचनों की बीस सुंदर पुस्तकें केवल बीस रु0 भेजकर प्राप्त कीजिए। स्वयं पढ़ने के लिये तथा अन्य लोगों को देने के लिये मंगवाईए।

पता: THE BIBLE TEACHER
C-22 N.D.S.E II
NEW DELHI-110049

ज़रा सोचिये !

पतरस कैथलिक था ! पौलुस प्रोटेस्टैन्ट था ! मसीह ने कहा था, कि मैं पेनटेकोस्टल चर्च (कलीसिया) बनाऊंगा ! मत्ती मेथोडिस्ट चर्च का मेम्बर था ! और यूहन्ना बैपटिस्ट चर्च में था ! पहली शताब्दी में मसीह के अनुयायी लूथरन, ब्रेद्रन और सालवेशन-आर्मी जैसी सैकड़ों साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बटे हुए थे ! लोग सीलास को पास्टर सीलास, तीमुथियुस को पादरी तीमुथियुस, तीतुस को रेवरेन्ड तीतुस, फिलिप को फ़ादर फिलिप, और हनन्याह को बिशप साहब कहते थे ! और, हाँ, पतरस तो पोप था ही !!

क्या आप बता सकते हैं !

बाइबल की कौन सी पुस्तक में, किस अध्याय में और किस पद में इनके बारे में मिलता है:

"बड़ा दिन"

"खजूरों का इतवार"

"गुड फ्राइडे"

"ईस्टर"

"बालकों को बपतिस्मा देना"

"दृढ़िकरण"

"जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।" (२ यूहन्ना ९)।"

मसीह की सारी शिक्षा बाइबल के नए नियम में है। क्या आप हमारे साथ मिलकर नए नियम की उस मसीहीयत को पुनःस्थापित न करना चाहेंगे जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है ?

यदि इस विषय में आपको और अधिक जानकारी की आवश्यकता है तो आप हमें इस पते पर लिख सकते हैं:

मसीह की कलीसिया
बॉक्स नं0 3815
नई दिल्ली - 110049

CHURCH OF CHRIST
BOX 3815
NEW DELHI - 110049

प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को रेडियो पर सुनिये

प्रत्येक: मंगलवार को रात 9 से 9:15
बृहस्पतिवार को रात 9 से 9:15
शुक्रवार को रात 9 से 9:15
रवीवार को दिन में 12.45 से 1:00

वक्ता: श्री सनी डेविड
प्रस्तुतकर्त्ता: मसीह की कलसिया